P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6 * ISSUE-6 * (Part-1) February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

बागड़ क्षेत्र के भित्ति चित्र : एक अध्ययन

शिवकेश
शोधार्थी,
भारतीय इतिहास एवं संस्कृति विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, भारत

सारांश

राजस्थान के चित्र कला के इतिहास में जहाँ हर प्रान्त स्थान की कला को उभार कर जन–साधारण के दृष्टि पथ में लाया गया हैं, वहीं बागड़ क्षेत्र के भित्ति चित्रों का उल्लेख नहीं के बराबर हुआ है। हमारे पूर्वज चित्रकारों की आत्मा का सौन्दर्य वर्षों से जनसाधारण के मध्य आने के लिए छट–पटा रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में बागड़ क्षेत्र के भित्ति चित्रों का अध्ययन किया गया है।

डूँगरपुर के राजवंश में महारावल श्री आसकरण जी, श्री शिवसिंह जी, श्री उदयसिंह जी एवं श्री विजयसिंह जी आदि बड़े विद्या रसिक तथा कला प्रेमी शासक रहे, जिन्होंने कलाकारों को प्रश्रय दिया और राजप्रसादों एवं नगरों के सौन्दर्य की अभिवृद्धि के लिये नाना प्रकार के कार्य किये। डूँगरपुर के राजप्रसाद में प्राप्य कलात्मक भित्ति–चित्र उन्हीं के कालानुराग की अनुपम देन है।

मुख्य शब्द : कलम, राजप्रसाद, भित्तिचत्र, रासलीला, कलानुराग, आलेखन, दीवानखाने।

प्रस्तावना

डूँगरपुर के प्राचीन राजप्रसाद के सभाखण्ड में विशिष्ठ एवं सार्वजनिक खण्डों में, दीवानखानों में, शयनागारों में तथा भक्ति–खण्ड आदि में पृथक–पृथक ढंग से चित्र अंकित किये गये हैं।

राजप्रसाद की प्रथम मंजिल के सुविशाल सभाखण्ड की दीवार पर शेर के शिकार का दृश्यांकन सर्वोत्तम कलाकृति की गणना में आता है। लगभग 200 वर्ष पूर्व चित्रित किया गया यह चित्र आज चित्रित किया हो, ऐसा आभास होता है। सभा ग्रह की दीवार पर चित्रित रूण्ड–भैरूण्ड पक्षी का चित्र भी बहुत ही सुन्दर है। यह दो चोंच वाला पक्षी हाथियों को अपनी चोंच एवं पैरों द्वारा पकड़ कर आकश में उड़ता दिखलाया गया हैं। राजप्रसाद के द्वितीय खण्ड को पूर्णतः भक्ति–खण्ड भी कहा जा सकता है। उसकी दीवारों पर आसमान में उड़ते हुए ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इन्द्र और नारद ऋषि के भित्ति चित्र, चित्रित है। इन चित्रों में राजपूत कलम का पूर्ण प्रभाव झलकता हैं।

राजप्रसादों को तृतीय मंजिल की दीवारों पर राज–सेना का समर प्रयाण एवं आक्रमण का विशाल चित्र चित्रित हैं। चित्रों में भवन श्वेत रंग से दिखाये गये हैं। इसमें गुम्बद बरामदे, महराबें, चबूतरे, छज्जे तथा जालियाँ कलात्मक रूप से दिखायी गयी हैं। राजप्रसाद एवं उसके बाहर होते युद्ध का चित्र राजस्थान शैली के अनुकरण का सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त फर्श, कालीन, पर्दे, छतों, स्तम्भों, दीवारों एवं वस्त्रों में भी आवश्यकतानुसार आलेखनों का प्रयोग किया गया है। इसी खण्ड की एक विशिष्ठ आलमारी में चित्रित काम सूत्र के पृथक–पृथक आसनो के चित्र चित्रित किए गए हैं। इसके अतिरिक्त कुछ चित्रों में प्रादेशिक शिवशाही पगड़ी का उपयोग विशेषतः दिखाई देता है। इसी के साथ–साथ राठौड़ी, मेवाड़ी पगड़ियों को भी दिखाया गया है।

राजप्रसाद के चतुर्थ मंजिल के दीवानखाने में दर्पण के छोटे–छोटे सूक्ष्म टुकड़ों को चिपकाकर चित्र बनाये गये हैं। यह कांच का कार्य प्राचीन होकर भी नवीनता का आभास कराता है। इनमें राजपुरुषों, राजसवारी, पशु–पक्षियों आदि के दर्पण चित्र है, जो श्रेष्ठतम कृतियों में आते हैं। कांच के विभिन्न टुकडों के सहारे मूक चित्र बोल उठे हैं। जड़ आकृतिय जानदार बन गई हैं और कल्पनाएँ साकार हो उठी है। इन दर्पण चित्रों में कला का ऐसा कमाल है कि दर्शक आश्चर्य मग्न हो जाता है। इस राजप्रसाद के अन्य कुछ चित्र भी बागड़ के उच्च कोटी के चित्रों में स्थान पाने योग्य है। गगन में विचरण करते हुए शिव पार्वती के चित्र, घोड़ा–गाड़ी में बैठे राजा–रानी एवं उसे हांकती हुई दासी का चित्र, राजपुरुषों की घुड़सवारी का चित्र, शिकार को जाते हुए राजा का चित्र,

राजपुरुषों की घुड़सवारी का चित्र इत्यादि बड़े ही भाव–पूर्ण एवं कलात्मक बन पड़े हैं।

इसी महल में आध्यात्मिक एवं धार्मिक घटनाएँ भी चित्रित की गई हैं। कुछ चित्र तांत्रिक विद्या/हिरण्य गर्भ, सहस्त्र दल, चतुर्दल कमल, षटदल, अष्टदल आदि के भी हैं। राजप्रसाद की छतें आलेखनों से खचाखच भरी पड़ी है, जिनमें पुष्प एवं मानवाकृतियों की भरमार है। हाथी–घोड़े, शेर एवं अन्य पशु–पक्षी, मानवाकृतियों, मुगलों की शोभा कलाकारों ने मुक्त हस्त से बतलाई है।

बागड़ के इन चित्रों में पुरुष और नारी की आकृतियों का प्रभावशाली एवं महत्वपूर्ण चित्रण हुआ है। पुरुष विशिष्ठ व्यक्ति रूप में नहीं अपितु शौर्य, शक्ति एव गरीमा के प्रतिक के रूप में चित्रित किये गये हैं। भित्ति–चित्रों के अलावा कहीं–कहीं कागजों पर बने एवं दीवारों पर सीमेन्ट से मढ़े गये चित्र भी मिले है। ऐसे उल्लेखनीय चित्रों में हारित ऋषि एवं बापा रावल, पृथ्वीराज चौहान द्वारा मोहम्मद गौरी का वध, महाराणा प्रताप, श्री खूमाणसिंह आदि के चित्र विशेष उल्लेखनीय है। महारावल उदयसिंह का ऐसा ही पोट्रेट मोहम्मद हुसैन कुरैशी, छाटी, डूँगरपुर के घर की दीवार पर भी मढ़ा है, जिसे श्री हसन खाँ, हवलदार द्वारा अपने आश्रयदाता की स्मृति को संजोए रखने के उद्देश्य से बनवाया गया था। सन् 1933 के आस–पास के बने इसी तरह के श्री उदयसिंह जी, श्री विजयसिंह आदि के भित्ति पोट्रेट श्री जवाहर लाल जी वकील, डूँगरपुर के मकान की दीवारों पर बने हुए प्राप्त हुए हैं। इन पोट्रेट में स्वर्ण रेखाओं द्वारा आभूषणों, वस्त्रों, पगड़ियों आदि में महत्वपूर्ण कार्य हुआ है।

ये चित्र 150–200 वर्ष पूर्व के बने हैं। चित्रों को अब तक सुरक्षित रखने एवं इनका समय–समय पर जीर्णोद्धार कराने का श्रेय साहित्य, शिल्प एवं कला के अनुरागी वर्तमान महाराव श्री लक्ष्मणसिंह जी साहब को है। महलों में संख्याबद्ध चित्रों को जो बहुत ही प्राचीन है, उनका पुनः नाथद्वारा के प्रसिद्ध चित्रकार, स्व. प्रेमचन्द, रामलाल आदि को बुलवाकर आपने जीर्णोद्धार करवाया।

डूँगरपुर जिले के गालियाकोट कस्बे में माही नदी के तट पर स्थित रामद्वारा की दीवारों पर रामायण एवं महाभारत के प्रसंगों के चित्र अंकित हैं। उनकी चित्र–शैली सामान्य बागड़ी लोक–शैली से मिलती–जुलती है। सुरक्षा के अभाव में यहां के अधिकांश चित्र वर्तमान में प्रायः अस्पष्ट है। यहां पर राम और रावण युद्ध का चित्र, कुम्भकरण की निद्रा का चित्र, रामायण सुनते राजपुरुषों का चित्र, राधा–कृष्ण का चित्र, कृष्ण की रासलीला आदि के चित्र सुन्दर बन पड़े हैं।

डूँगरपुर जिले के सागवाड़ा नामक कस्बे में भी मिलते है। श्री नथमल जी की हवेली में लगभग 150 वर्ष पूर्व के बने ये भित्ति चित्र हैं। हवेली गिर चुकी है। यहां पर सोलह सूंड वाले हाथी का चित्र है, जिसका अत्यन्त कुशलता से अंकन किया गया है। यह दर्शनीय चित्र है। इसके अतिरिक्त नर्तकी तथा कृष्ण लीलाओं के चित्र भी अंकित किए गए थे, किन्तु अब केवल उनके चिह्न मात्र अवशिष्ट है।

डूँगरपुर जिले में ही कनबा ग्राम से 2 किलोमीटर की दूरी पर स्थित नवलश्याम ग्राम में तालाब के किनारे पर बने शिव मंदिर में कुछ कांच के बने भित्ति चित्र विद्यमान है।

बांसवाड़ा में स्थानीय राजप्रसाद के अतिरिक्त श्री जयसुखराम जी का नगरवाड़ा के भवन, जिसे रावल की हवेली के नाम से जाना जाता है, की दूसरी मंजिल पर 8X6 के आयताकार कमरे में कृष्ण लीलाओं, शिव, हाथियों आदि सुन्दर आलेखों के चित्र चित्रित हैं। संभवतः इस कक्ष का निर्माण आसना हेतु किया गया होगा और कृष्ण को आराध्य देव मानकर कृष्ण लीलाओं के अनेक चित्र चित्रित करवाये गये होंगे। नीचे के पैनल में हाथियों के अनेक चित्र बने हुए हैं। युद्ध के चित्र भी बने है। एक चित्र में रावल जी को अश्व पर बैठे हुए शूकर का शिकार करते हुए दिखाया गया है, जिसमें शिकारी कुत्ते को शूकर के पीछे भागता दिखाया गया है। एक अन्य चित्र भी शंकर एवं पार्वती का चित्रित है। इसी प्रकोष्ठ में राजपूत रानी का सुन्दर चित्र चित्रित है। संभवतः यह राधा का चित्र होगा, जिसके परिधान एवं अलंकरण राजपूती है। किन्तु यह नारी चित्र राजस्थान की विभिन्न शैलियों के नारी चित्रों से किसी प्रकार कम नहीं है। यह चित्र बागड़ चित्र शैली का ज्वलंत उदाहरण प्रस्तुत करता है। इसके अतिरिक्त यहां श्रीनाथ एवं बल्लभाचार्य के भी लघु–चित्र बने हुए है। मुख्यतः इन चित्रों के बनवाने में कुछ की पृष्ठभूमि हरी दिखाकर लाल श्वेत रंग से चित्रांकन किया गया है।

इसके अतिरिक्त चाँदखवाड़ा तथा अथूर्णा ठिकाने में भी भित्ति चित्र है। अथूर्णा ग्राम राजस्थान का महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल है। प्राचीन समय में यह परमारों की राजधानी रहा है और अथूर्णा ग्राम भित्ति चित्रों क क्षेत्र में भी पीछे नहीं है। अथूर्णा की राज हवेली में अनेक भित्ति चित्र मिले है। पैर से काँटा निकालती हुई युवती का चित्र अत्यन्त सुन्दर बन पड़ा है, परन्तु दुर्भाग्य से वर्तमान अवस्था में यह चित्र अस्पष्ट है। इसके अतिरिक्त कृष्ण लीलाओं, गणेश स्तूति आदि के चित्र चित्रित है। वर्तमान में इन चित्रों की स्थिति दर्दनाक है। हवेली प्रायः नष्ट–भ्रष्ट है। दीवारे प्रायः फटी हुई हैं। वर्षा से ये चित्र वर्षों से पानी में नहाते रहे है। अतः इनका सुन्दर आवरण समाप्त हो गया है। फिर भी इनके रंगों ने अपनी विशेषताओं को खोया नहीं है। आज भी ये चित्र अपनी विशेषताओं को लिए हुए कुछ अंशों में विद्यमान है।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध पत्र का उद्देश्य बागड़ क्षेत्र की भित्तिचित्र कला को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाना है।

निष्कर्ष

बागड़ के भित्ति चित्रों में राजपूत–मुगल एवं गुजराती शैलियों का मिश्रण है। डूँगरपुर–बांसवाड़ा के राजघरानों का मेवाड़ से निकट सम्बन्ध रहा, अतः यहां के इन चित्रों पर मेवाड़ शैली का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। मुसलमानों के आक्रमण के फलस्वरूप यहां व्यवहार में तादात्म्य भी हुआ और इस तरह मुगल शली का प्रभाव भी पड़ा। गुजरात की सीमा तो इस प्रदेश को छूती ही है,

अतः गुजराती शैली से भी यहां का चित्र जगत वंचित नहीं रहा। इन चित्रों के विषय राजा–महाराजाओं के जीवन चित्रण तथा धार्मिक जगत इत्यादि का स्पर्श लिये हुए है। इन विभिन्न चित्रों से तत्कालीन राजस्थानी जीवन पर पर्याप्त मात्रा में प्रकाश पड़ा है। वर्तमान में इनके संरक्षण की महत्ती आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

डूँगरपुर राज्य का इतिहास – डॉ. गौरी शंकर हीराचन्द ओझा।
बागड़ का आदिवासी समाज – डॉ. एल.डी. जोशी।
आदिवासियों की कला – रवीन्द्र डी. पाण्ड्या।
भारतीय चित्रकला का विकास – डॉ. आर.ए. अग्रवाल।
आकृति–80, राजस्थान ललित कला अकादमी प्रकाशन।
चुड़ैल छज्जों में हमारे पुरखों की चित्रशालाऐं – रविन्द्र डी. पाण्ड्या।
बागड़ के भित्ति चित्र – रवीन्द्र डी. पाण्ड्या।
अथूर्णा ग्राम – रवीन्द्र डी. पाण्ड्या।
भित्ति चित्र – रवीन्द्र डी. पाण्ड्या।
वनवासी भील एवं उनकी संस्कृति – श्री चन्द जैन।